ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 6 Issue 2 April 2020

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

भारतीय चेतना में राष्ट्रपिता मोहन दास करमचंद गाँधी का राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ0 निशु सिन्हा
स्हायक प्राध्यापक (तदर्थ), इतिहास विभाग
गुरूघासीदास केंन्द्रीय विश्वविद्यालय, विलासपुर, छत्तीसगढ़

Abstract

2 अक्टूवर 1869 ई0 को काठियावाड़ के पोरबन्दर (गुजरात) नामक स्थान पर पैदा होने वाले गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। 1887 ई0 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वह बैरिस्टर (वकालत) की पढ़ाई करने इंग्लैंड गये और 1891 ई0 में बैरिस्टर बनकर भारत वापस आये। कुछ दिनों तक राजकोट और बम्बई में वकालत करने के पश्चात् 1893 ई0 में महात्मा गाँधी एक मुकद्दमें के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गये, गाँधी जी ने देखा कि वहाँ भारतीयों पर सामाजिक व राजनीतिक प्रतिबन्ध व निर्योग्यतायें आरोपित कर दी गई थीं, सार्वजनिक जीवन में उनसे गुलामों की तरह व्यवहार किया जाता था। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी ने भारतीयों को आत्म सम्मान की भावना, निर्भयता और स्वाधीनता का पाठ पढ़ाया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को सम्मान पूर्ण जीवन दिलाने के बाद गाँधी जी ने भारत आकर भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में सकारात्मक बदलाव किये जिसके परिणामस्वरूप भारत एक स्वतन्त्र देश के रूप में परिणित हो सका।

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय चेतना में राष्ट्रपिता माहत्मा मोहन दास करमचंद गाँधी का राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण दर्शाया गया है।

Keywords

विश्व बन्धुत्व, सामाजिक समानता, सामंजस्यता, सार्वजनिक, निर्भयता, आत्मसम्मान।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

भारतीय चेतना में राष्ट्रपिता मोहन दास करमचंद गाँधी का राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ0 निशु सिन्हा
स्हायक प्राध्यापक (तदर्थ), इतिहास विभाग
गुरूघासीदास केंन्द्रीय विश्वविद्यालय, विलासपुर, छत्तीसगढ़

शोध पत्र

महात्मा गाँधी एक ऐसे जननायक थे, जिन्हे किसी सत्ता का कोई सहारा नहीं था, वे एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिनकी सफलता छल–कपट पर नहीं, बल्कि उनके अन्तःकरण के नैतिक मूल्यों पर आधारित थी, आज जरूरत इस बात की है कि नेता व जनता महात्मा गॉधी से प्रेरणा ग्रहण करें।

गाँधी जी के राजनैतिक दृष्टिकोण के अनुसार वास्तविक लोकतन्त्र वही है, जो केवल कुछ ही गिने–चुने व्यक्तियों के नहीं बल्कि सभी के लिये सार्थक होना चाहिये। उसमें निर्धनतम व्यक्ति और अपंग तथा नेत्रहीन और बधिर भी शामिल हों। एक सच्चे लोकतंत्र में लक्ष्य के प्रति गम्भीर और ताल्कालिकता का निर्वाह जरूरी होता है।

गाँधी जी के अनुसार जनता को जागरूक करना नितांत आवश्यक है, वे जानते थे कि जब लोग जागरूक बन जायेगें तो एक क्रान्तिकारी शक्ति बनकर विश्व के सामने परिलक्षित होगें।

समाजिक दृष्टिकोण में वे आदर्श के लिये मात्र शाब्दिक सहानुभूति में विश्वास नहीं रखते थे, उनके अनुसार समूची सामाजिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि आदर्श व्यवहारिक रूप में दिया जा सकें।

महात्मा गाँधी के लिये सत्य ही ईश्वर था और अहिंसा धर्म। उन्होने कहा था कि मेरे धर्म का प्रथम सिद्धान्त अहिंसा है, और पन्थ का आखिरी सिद्धान्त भी अहिंसा ही है।

गाँधी के अनुसार भारत में सभी धर्मो और जातियों के लोगो को एक झंड़े के नीचे एकत्र रहना चाहिये और अपने मन में एक–जुटता और एकता की भावना धारण करते हुये सभी प्रकार की साम्प्रादायिक व संकीर्ण भावनायें त्याग देनी चाहिये।

गाँधी जी का मानना था कि एक अच्छे नागरिक का जीवन कर्म प्रधान होना चाहिये। गाँधी जी ने स्वयं को पूर्ण रूप से भारतीय जनमानस से जोड़ा। उनका कहना था कि–हमें पहले अपने जनमानस में सजीव सम्पर्क अवश्य कायम करना चाहिये, उनके बीच रहकर उनके लिये कार्य करना चाहिये, हमें उनके दुखः या कष्ट बांटने चाहिये, उनकी कठिनाईयों को समझना चाहिये और उनकी आवश्यकताओं का अनुमान लगाना चाहिये।

हमें उन ग्रामवासियों से अवश्य मिलना चाहिये, जो कड़ी धूप में कमर झुकायें हल चलाते हैं। जब तक हम ऐसा नहीं करेगें तब तक सच्चे अर्थो में जनमानस का प्रतिनिधित्व नहीं कर पायेगें और ऐसा होने पर मेरा विश्वास है कि लोग आपकी प्रत्येक पुकार पर दौड़े आयेगें।

भारतीय जन समूह महात्मा गाँधी के अवाहन के प्रति पूरी तरह समर्पित था। उन्होने लोगों से कहा था कि असली स्वराज मुठ्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता केन्द्रित होने से नहीं बल्कि उस समय आयेगा जब जनता के पास इतनी झमता होगी कि वह सत्ता का दुरूपयोग करने वालों का प्रतिरोध कर सके। उन्होंने विश्व–बन्धुत्व की भावना को प्रचारित करने पर भी बल दिया, वास्तव में वे व्यापक स्तर पर मानव कल्याण करना चाहते थे।

गाँधी जी के अनुसार हमें आत्मकेन्द्रित समाज जिसमें समाज संकीर्ण स्वार्थो, आत्म प्रगति और स्वार्थी आकांक्षाओं से ऊपर उठने में असमर्थ है को त्यागना होगा। दरअसल नागरिकों को यह बात एक अपवाद नहीं बल्कि नियम के रूप में समझ लेनी चाहिये कि यदि हम दूसरो के प्रति चिन्ता जताने वाली जीवनशैली में लोगों का विश्वास बहाल करने की दिशा में कुछ नहीं करेगें तो हमारी स्वयं की कोई अहमियत नहीं होगी।

एक नैतिक व्यक्ति अथवा नागरिक वही है जो अपने जैसे अन्य लोगों के कल्याण व खुशहाली की चिन्ता करता है। वह समाज के व्यापक हित में अपने निजी लक्ष्यों को छोड़ सकता है। उससे उम्मीद की जाती है कि वह स्व–केन्द्रित ना होकर उदार गतिविधियों में अपने को लगाये जिसमें सांमजस्य पूर्ण और पारस्परिकता के सम्बन्धों का निर्माण हो सके, ये विचार और मूल्य व्यक्ति द्वारा समाज में संचारित किये जाने चाहिये जिसमें वह रहता है।

गाँधी जी का स्वप्न एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जिसमें सभी को समान अधिकार, सम्मान व सुरक्षा प्राप्त हो। प्रत्येक व्यक्ति यह समझ सकें कि विश्व शांति में ही मानवजाति सुरक्षित तथा खुशहाल रह सकती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध पत्र के अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट है कि संघर्षो का समाधान करने का गाँधीवादी तरीका अपनाया जाये। गाँधी जी के सिद्धान्तों में वह दृष्टि और भावना निहित है, जिसे अपना कर मानवजाति अपने को एक परिवार के रूप में (बसुधैव कुटुम्वकम्) विकसित कर सकती है और वर्तमान परमाण युग में अपने को विनाश से बचाने का यही एकमात्र रास्ता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बरूण, त्रिपाठी अमलेश, विपिन चंद स्वतन्त्रता संग्राम
2. महाजन विद्याधर–आधुनिक भारत का इतिहास
3. ग्रोवर बी एल–भारत का स्वतन्त्रता संग्राम
4. मोहनदास करमचंद गाँधी–आत्मकथा
5. सुमित सरकार– आधुनिक भारत(1885–1947 ई0)
6. सब्यसाची भट्टाचार्य– आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास
7. पांण्डेय ज्ञानेद्र, शाहिद अमीन– निम्नवर्गीय प्रसंग
8. शर्मा रामशरण–शूद्रो का प्रचीन इतिहास